Vol. 9
Issue 2
15 July 2018
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा

बीज शब्द :

आदिवासी, बिरसा मुंडा, स्वतंत्रता संग्राम, स्वातंत्र्य सेनानी, आदिवासी विद्रोह, ब्रिटिश साम्राज्य।

भारत देश के आदिवासी लोगों का जननायक एवं पहला सरदार स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बिरसा मुंडा की पहचान है। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में बिरसा मुंडा के नेतृत्व ने यह निष्कर्ष निकाला था कि उनके दु:ख और वेदना का मूल कारण ब्रिटिश साम्राज्य है। 19वीं सदी में संपूर्ण छोटा नागपुर अंग्रेजों और जमींदारों की गुलामी में जकडा हुआ था। इस स्थिति को देखते हुए बिरसा ने आदिवासी बंधुओं की संस्कृति और पहचान को बचाने के लिए आवाज उठायी और बढते जुल्म पर आवाज उठाकर अपने कौम के अस्तित्व को बचाया और आदिवासियों के मानवी अधिकारों एवं हक का मुद्दा, महिला सशक्तिकरण, गरीबी, अल्प विकास, अंधविश्वास और आदिवासियों के शोषण को उजागर किया तथा तीसरी धारा का प्रतिनिधित्व आदिवासी महिलाओं को बिरसा आंदोलन में सम्मिलित किया। आदिवासी महिला पीढी के लिए एक प्रेरणास्रोत का कार्य किया। बिरसा के नेतृत्व ने आदिवासियों को अपने अधिकारों के लिए लडने की प्रेरणा दी। वह चिंगारी आज भी हर आदिवासी के दिल में सुलग रही है। यह नयी पीढी के लिए प्रेरणादायी रहेगी और बिरसा मुंडा को एक महान समाज सुधारक, रचनात्मक प्रतिभा के धनी और इन सबसे अधिक एक उत्साही राष्ट्रवादी और राष्ट्रीय नेताओं की श्रेणी में लाकर उनको खडा कर दिया। वह पहले आदिवासी क्रांतिकारी और सारे भारत वर्ष में आदिवासी लोगों के जननायक एवं लोकनायक के रूप में पहचान बनाने वाले एक प्रभावी नेता के रूप में जाने जाते है।

*****

डॉ सविता चौधरी
किसान कॉलेज, पारोला,
जिला जलगांव- 425111
E-mail: drsavitachaudhari@gmail.com

आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा

आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा को सूचना प्रोद्योगिकी के युग में भारत के सभी आदिवासी समुदायों ने आदर्श और प्रेरणा के रूप में स्वीकारा है। भगवान बिरसा मुंडा ने ब्रिटिशराज, जमीदारों, दिकुओं के खिलाफ स्वायत्तता और स्वशासन की मांग की। बिरसा मुंडा के संघर्ष के फलस्वरूप ही छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट, 1908 से इस क्षेत्र में लागू हुआ जो आज तक कायम है। यह एक्ट आदिवासी जमीन को गैर आदिवासी में हस्तांतरित करने में प्रतिबंध लगाता है और साथ ही आदिवासियों के मूल अधिकारों की रक्षा करता है। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों के जननायक के रूप में योगदान दिया है। बिरसा मुंडा का यह संघर्ष, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक आयाम से भरा, एक पूर्ण आंदोलन था, जिसने धार्मिक, जातीय और राजनैतिक आंदोलनों की पूरी श्रृंखला को प्रभावित किया। अध्यात्म से प्रेरित, श्रीराम, श्रीकृष्ण और ईसा मसीह की परंपरा में, 'मुंडा' समुदाय के उद्धारक और एक असाधारण लोकनायक बने, जिसने जनता के हृदय में प्रवेश किया और आदिवासी अधिकारों के आरंभिक प्रवर्तक और स्वरक्षक और विदेशी सत्ता के आगे कभी न झुकने वाले योद्धा के रूप में अपनी पहचान बनाई। आदिवासियों ने अपने हक के लिए अनेक आंदोलन किए उनमे 1756 से 1773 'पहाडी आंदोलन', 1795 से 1800 'चुवार आंदोलन', 1819 से 1842 'गोंड आंदोलन', 1831 से 1832 'कोल आंदोलन', 1855 से 1856 'खेरवार संथाल आंदोलन', 1859 से 1894 'सरदार मुंडा आंदोलन'। मुंडा आंदोलन का नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया था। बिरसा आंदोलन के बारे में शैलेन्द्र सेंगर कहते है कि ''मुंडा आदिवासियों का विद्रोह 1899-1900 ई. के बीच हुआ। बिरसा मुंडा ने इसका नेतृत्व किया उसका जन्म 1872 ई में चालकद गाँव में हुआ था उसकी शिक्षा चाईवासा में हुई थी।''[1] वह अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान रखते थे। जर्मन धर्म प्रचारकों से प्रभावित होकर उन्होंने ईसाई धर्म का स्वीकार किया किंतु पिपासा शांत नहीं हुई वह अपने पूर्वजों के मौलिक धर्म में विश्वास करने लगा साथ ही हिंदु धर्म की नयी विचारधारा से भी प्रभावित हुए। इस अध्ययन में आदिवासी जननायक बिरसा मुंडा का चरित्र एवं कार्य, नेतृत्व आदि पहलुओं पर विचार विमर्श किया है। आदिवासी नई पीढी के लिए जननायक बिरसा मुंडा का अध्ययन प्रेरणादायी रहेगा।

बिरसा मुंडा की जन्म कहानी - भारत का झारखंड राज्य आदिवासी बाहुल्य है। बिरसा का जन्म रांची जिले के उलीहातु नामक स्थान में लगभग 15 नवंबर 1875 में हुआ। बिरसा, मुंडा जनजाति से थे। जो कि भारत की सबसे बडी आदिवासी जनजातियों में एक है। बिरसा के पिता सुगना मुंडा कृषक थे। उनका पूरा जीवन अत्यंत अभाव में गुजरा। कुमार सुरेश सिंह के अनुसार ''लोकगीतों में ऐसा वर्णन आता है कि धरती आबा का जन्म या अविर्भाव भादो के महिने में हुआ था।''[2] बिरसा मुंडा का जन्म स्थान उलिहातु था। उसका बडा भाई कोमता मुंडा उस गांव में रहता था। चाचा पसना मुंडा उलिहातु में रहते थे इसी वजह से बिरसा को चाचा ने संभाला था। गरीबी के कारण वह अपने चाचा के साथ अयूभाटू गाँव में पला बढा, बिरसा ने प्रारंभिक शिक्षा सलगा में स्थित जयपाल नाग द्वारा चलाए जा रहे स्कूल से की। पढाई में तेज होने के कारण जयपाल नाग ने उन्हें जर्मन लुथरेन मिशन स्कूल चाई बासा में डालने की सिफारिश की। इसी समय उनका ईसाई धर्म में धर्म परिवर्तन हुआ और उन्हें बिरसा डेव्हिड नाम मिला जो बाद में बिरसा दौद पूर्ती के नाम से उनकी पहचान हो गई। मुंडा जाति के अधिकारों के लिए लडने वाले क्रांतिकारी बिरसा का जेल में 9 जून 1900 को, अल्पायु में रांची जिले में, निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद ब्रिटिश सरकार ने आदिवासी लोगों को आश्रय दिया और 'छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट' पारित किया। जिसके तहत बिरसा मुंडा के दिल की आवाज सुनी और आदिवासी समुदाय को न्याय देने का प्रयास किया।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष और आंदोलन- ब्रिटिश शासनकाल में सरकार की नीतियों के कारण आदिवासी कृषि व्यवस्था,सामंती व्यवस्था में बदलाव आ रहा था। आदिवासी कृषि प्रणाली पर आघात हो रहा था और गैर आदिवासी लोगों को कृषि के लिए बुलाया गया। इस प्रकार आदिवासी लोगों की जमीन जाने लगी इससे आदिवासी लोगों का शोषण बढा। मुंडा जनजाति छोटा नागपुर क्षेत्र में आदिकाल से रह रहे थे। माजिद मिया के अनुसार ''भारतीय भूखंड प्रागैतिहासिक काल से ही कोल,भील, मुंडा आदि जनजातियों का निवास स्थान रहा है। एक समय ऐसा

1. शैलेन्द्र सेंगर - आधुनिक भारत का इतिहास, ॲटलांटिक पब्लिशअर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृ0 168

2. कुमार सुरेश सिंह - बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2003, पृ0 57

3. माजिद मिया - जंगल के दावेदार : आदिवासी संघर्ष, दलित-आदिवासी विशेषांक, 'अपनी माटी' ई पत्रिका, सितंबर-नवंबर 2015

था पुरा छोटा नागपुर क्षेत्र घने वनों से आच्छादित था।''[3] सर्वप्रथम कोल जाति के लोगों ने इन वनों को साफ किया और यहाँ अपना गाँव बसाया। 'कोल' जाति कई गोत्रों में बँटी हुई है। इनमे से एक गोत्र था मुंडा। वास्तव में कोल जाति का जो गोत्र गाँव बसाता था, वहाँ का मूल निवासी हो जाता था। इसके बावजूद अंग्रेजी सरकार के आने पर आदिवासियों पर अनेक प्रकार के टैक्स लागू किये गए। इस बीच जमींदार आदिवासियों और ब्रिटिश सरकार के बीच मध्यस्थ होने का काम करने लगे, इस वजह से ब्रिटिश सरकार ने आदिवासी इलाको पर अपनी पकड बनाई। ब्रिटिश सरकार से आदिवासियों को न्याय नहीं मिला, इसीलिए आदिवासियों ने संघर्ष का रास्ता चुना। ब्रिटिश राज से लोहा लेने वाले महानायक बिरसा मुंडा का जीवन यह रहस्यमय और नई पीढी को चौका देने वाला है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ उन्होंने जन आंदोलन किया और लोगों में कम उम्र में मानवी चेतना पैदा की। जननायक के संदर्भ में अजहर हाश्मी लिखते है कि ''भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनितिक युग का सुत्रपात किया।''[4] ब्रिटिश कानून को चुनौती देकर आदिवासियों के हित के लिए आवाज उठाई और सामाजिक जागरण को प्राथमिकता दी।

गोपी कृष्ण कुंवर लिखते है कि ''बिरसा द्वारा जागरूक किए जाने पर जो आदिवासी ईसाई धर्म छोडकर विद्रोही बन चुके थे सरकार के अत्याचारों से बचने के लिए उन्होंने पुनः ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।''[5] स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बिरसा मुंडा की पहचान बनी। उनका स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान रहा है। सुप्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार महाश्वेता देवी के अनुसार छोटा नागपुर के राजा ने अपने निकट स्वजनों को जमीन एवं गाँवों को देकर जब जागीरदार बना दिया तब मुंडा लोग दक्षिण खुटकट्टी एवं पश्चिम तमाण्ड के पर्वतीय जंगली क्षेत्रों की तरफ चले गए। 1831-32 में कोल विद्रोह के बाद इन सब जगहों पर भी जमींदार और जागीरदार चले।''[6] जिसकी वजह से जमींदार और जागीरदार स्वतंत्र मालिक बने और मुंडाओं के अधिकार का क्षेत्र ही उनका नहीं रहा। आदिवासियों पर जमींदार और जागिरदार के साथ-साथ ब्रिटिश लोगों ने भी अत्याचार क्रकिया जिसकी वजह से आदिवासियों में अंग्रेजों के खिलाफ आक्रोश पैदा हुआ। बिरसा ने नारा दिया कि ''महार, नीराज तुंदु जाना औरो अबुआ राज ऐसे जाना' अर्थात ब्रिटिश महारानी का राज खत्म हो और हमारा राज स्थापित हो। इस तरह बिरसा ने आदिवासी स्वायत्तता, स्वशासन पर बल दिया। आदिवासी समाज भूमिहीन होता जा रहा था और मजदूरी करने पर विवश हो चुका था। इस कारण बिरसा के आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को आदिवासी हित के लिए कानून लाने पर मजबूर किया और आदिवासियों में इच्छाशक्ति जगाई। बिरसा ने दिकुओ-दीकू -गैर आदिवासी, शोषण करनेवाले के खिलाफ लोगों को खड़ा किया और लोगों को एकजुट किया। बिरसा के विद्रोह को रोकने के लिए 500 रू का इनाम भी घोषित किया। सन् 1900 में ब्रिटिश सेना और मुंडा सैनिको के बीच दुम्बरी पहाडियों में संघर्ष हुआ जिसमे अनेक आदिवासी सैनिक शहिद हुए, हालांकि बिरसा वहाँ से बच निकले। 3 मार्च 1900 को बिरसा जम्कोपाई जंगल चक्रधर में ठहरे हुए थे जहाँ सोते वक्त उन्हें गिरफ्तार किया गया।

धरती आबा का उपन्यास में यथार्थ चित्रण- बिरसा मुंडा के जीवन पर कई उपन्यासकारों और नाटककारों ने लेखन किया है। उनकी शौर्य गाथाएं नयी पीढी के लिए प्रेरणादायक और मार्गदर्शक है। धरती आबा की कहानी कई रचनाओं एवं काव्यों में रेखांकित की गई है। यह आदिवासी साहित्य की समृद्धता है। विश्वविख्यात लेखिका महाश्वेतादेवी ने अपने साहित्य में आदिवासी व वंचित समुदायों के जीवन चरित्र को गहराई से लिखा है। उन्होंने आदिवासी साहित्य पर 'चैटिट मुंडा', 'उसका तीर' उपन्यास लिखा। यह उपन्यास आदिवासी जीवन के साथ ही नायक के संघर्ष को बडी खूबसूरती से गुंथा है। महाश्वेता देवी की प्रसिद्ध पुस्तक 'अरण्येर अधिकार' मूलरूप से बंगला भाषा में लिखित, अधिकार वनों के प्रति चिंता को अपने शीर्षक से ही रेखांकित करती है। महाश्वेता देवी के उपन्यास का हिंदी रूपांतर है- जंगल के दावेदार। हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासियों के जीवन पर आधारित। साहित्य जगत में मील का पत्थर माना जाता है। लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से बिरसा के संपूर्ण जीवन का लेखाजोखा किया है। बिरसा का जन्म आदिवासियों का उद्धार करने के लिए ही हुआ था। वह कृष्ण की भांति मुरली बजाकर हिरण को बुला लेता है, खरगोशों को बुलाता है। बंसी की तान से सभी जानवरों को अपने बस में कर लेता है। मुंडा माताएँ करमी

4. अजहर हाश्मी-बिरसा मुंडा, आदिवासियों का महानायक, वेब दुनिया कॉम, 5 जनवरी 2019, पृ0 06

5. गोपी कृष्ण कुंवर - बिरसा मुंडा, प्रभात प्रकाशन, पटना प्रथम संस्करण 2011, पृ0 121

6. माजिद मिया - जंगल के दावेदार : आदिवासी संघर्ष, दलित-आदिवासी विशेषांक, 'अपनी माटी' ई पत्रिका, सितंबर-नवंबर 2015

से कहती हैं- 'ओ री करमी, वह अढतिया दिकू नंद जो ठाकुर पूजता है उसी किशन की तरह तेरा बेटा बंसी बजाता है रे। लडका बंसी बजाता है सब मुंडा लोगों के घर में। उसी बंसी को सुनकर भागते खरगोश, भयानक सुअर, बन के हिरन सब शांत होकर दो दंड रूक जाते है। ऐसा कभी कहीं देखा है।''[7] यह बिरसा के आत्मविश्वास की वजह से था। जो व्यक्ति जंगली जानवरों को अपने बस में कर सकता है वह मुंडाओं को क्यों नहीं।

बिरसा मुंडा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लडाई के पहले महानायक थे। आदिवासी धरती आबा को याद करेंगे तो बिरसा मुंडा याद आयेंगे। 'बिरसा मुंडा की याद में' शीर्षक से लिखी आदिवासी साहित्यकार हरिराम मीणा की कविता की ये पंक्तियाँ याद आती है- ''मैं केवल देह नहीं, मैं जंगल का पुश्तैनी दावेदार हूँ, पुश्ते और उनके दावे मरते नहीं, मैं भी मर नहीं सकता, मुझे कोई भी जंगलों से बेदखल नहीं कर सकता उलगुलान! उलगुलान!!''[8] बिरसा मुंडा का आंदोलन 'उलगुलान' इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी जारी है। उलगुलान, आदिवासियों का जल-जंगल-जमीन के लिए लडा गया जन आंदोलन है जो आज भी जारी है। महाश्वेता देवी कहती है- 'जान गया। और देख, बीरसा के वंश के आदि पुरूषों ने छोटा नागपुर की नींव डाली थी, लेकिन राजा हुए और उससे हमारी धरती पर जंगलों में बाहर से लोगों ने आकर कब्जा जमा लिया सब छिन लिया। दूसरी जात के दूसरे देश के आदमियों ने।''[9] और हम देखते रह गए, कुछ भी न कर पाएं। क्या इसके लिए हमारे पुरखों ने इतने आंदोलन किये थे ?

आदिवासी आज भी उन्हें तीर, धनुष और मशाल के साथ देखना पसंद करते है। लोक कथाओं में आज भी बिरसा एक चतुर सेनानी के रूप में याद किये जाते हैं। पी.पी. हेम्बरोम एक उदा. के माध्यम से बिरसा के वीरता का वर्णन करते है- ''पिताजी जोहन ऐसा बताते थे एक बार जब बिरसा मुंडा जगमई वन में छिपे हुए थे तो लगभग पचास की एक ब्रिटिश सैनिक टुकडी से भेंट हुई। बिरसा को नहीं पहचानने के कारण उन्हीं से बिरसा के छुपने की जगह के बारे में पूछा। उसने पूर्ण अज्ञानता व्यक्त की। बहुत ही बार फुसलाने के क्रम में उन्होंने पैसा देने की बात की। शुरू में इंकार करते रहे किंतु पीछे तैयार हो गये और उन्होंने एक गफुा बताई जिसमें बिरसा छुपे हुए थे। जब सैनिक अंदर चले गये तो बिरसा मुंडा ने एक बडा पत्थर लुढका कर गुफा को बंद कर दिया और सैनिक अंदर ही मर गये।''[10] इससे सिद्ध होता है कि बिरसा मुंडा ने सशस्त्र विद्रोह में भाग लिया था और इस आंदोलन को उन्होंने व्यापक स्वरूप दिया। बिरसा मुंडा के जीवन पर आधारित महाश्वेता देवी का 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में लिखा है ''हम जिस तरह चिरकाल से है संग्राम बिरसा भी वैसा है। धरती पर कुछ समाप्त नहीं होता।''[11] धरती, पत्थर, पहाड, वन, नई ऋतु के बाद भी आगमन और समाप्ति यह दोनों प्रक्रिया निरंतर रहती है। पराजय से संघर्ष का अंत नहीं होता, वह बना रह जाता है क्योंकि जब तक मानव है तब तक संघर्ष चलता रहेगा। संजय कुमार बलौदिया कहते है कि ''झारखंड में बिरसा की बेडियों वाली प्रतिमाएं और तस्वीरे मिलती है। झारखंड के लोग बेडियों वाली तस्वीरे व प्रतिमाओं को ही अपनी प्रेरणा का स्रोत मानते है और इतिहास से खुद को जुडा महसुस करते है। महाश्वेता देवी ने उपन्यास लिखा है तो आजादी के महानायक के लिए आदिवासी समुदाय में गीत भी है। आदिवासी साहित्य में उलगुलान की ध्वनि आज भी गुंजती है।''[12] उन्नीसवीं सदी के अंत में बिरसा मुंडा विद्रोह ने किसी भी उपन्यासकार, रचनाकार, गीतकार आदि को प्रेरित किया। उनकी संघर्ष प्रणाली के बारे में कुछ लिखने की नये लेखकों को प्रेरणा मिली। इस संदर्भ में शैलेन्द्र चौहान लिखते है कि ''भारत के इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे आदिवासी नायक है जिन्होंने झारखंड में अपने क्रांतिकारी विचारों से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दिशा बदलकर नवीन सामाजिक युग का सूत्रपात किया।''[13] अंग्रेजों को चुनौती देकर समाज सुधारक एवं क्रांतिकारी नायक के रूप में सामने आये।

धरती आबा का नाटक में यथार्थ चित्रण - बिरसा मुंडा के जीवन पर विभिन्न भाषाओं में साहित्य लिखा गया है। हिंदी साहित्य में उपन्यास, कहानियाँ कविता, नाटक आदि लिखे गए है। ऋषीकेश सुलभ द्वारा लिखित नाटक 'धरती आबा' में

7. महाश्वेता देवी- जंगल के दावेदार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981, पृ0 85

8. राजन कुमार - उलगुलान- जारी है जंगल पर दावेदारी का संघर्ष, फारवर्ड प्रेस कॉम, 15 नवंबर 2017, बिरसा मुंडा की 143 वीं जयंती के अवसर पर प्रकाशित लेख से

9. डॉ संजय कुमार शर्मा - आदिवासी जननायक: बिरसा मुंडा : महाराष्ट्र हिंदी परिषद : 15वां अधिवेशन 28-29 दिसंबर 'उपलब्धि' 2007 पृ0 251

10. कुमार सुरेश सिंह- बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन: वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003, भूमिका से पृ0...vi

11. राजन कुमार- उलगुलान- जारी है जंगल पर दावेदारी का संघर्ष, फारवर्ड प्रेस कॉम, 15 नवंबर 2017, बिरसा मुंडा की 143 वीं जयंती के अवसर पर प्रकाशित लेख से

12. संजयकुमार बलौदिया- बिरसा मुंडा, शौर्य का पर्याय, पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 9 अगस्त 2016, पृ0 01

13. शैलेन्द्र चौहान- बिरसा मुंडा आदिवासी समाज के क्रांतिकारी नायक और समाज सुधारक, रचनाकार ई पत्रिका 2015

बिरसा मुंडा के जीवन पर आधारित सभी पहलुओं पर चर्चा की गई है। बिरसा स्वतंत्रता संग्राम का वीर क्रांतिकारी सेनानी था। जिसने मुंडाओं के अधिकारों को जाना और उसे पाने के लिए अंग्रेजी सरकार से संघर्ष किया। बिरसा सोचता है कि ''इतने दिन बीत गए और मैं आज तक मुंडाओं को उनका राज नहीं दिला सका। गुलामी का अंधेरा उनके ऊपर पहले की तरह ही छाया हुआ है।''[14] जनजातिय समाज के नायक बिरसा मुंडा पूरे भारतीय समाज के नायक के रूप में उभरते है और गुलामी के कठिन जीवन से मुक्ति के लिए आंदोलन आरंभ करते है। वह मुंडाओं को एकत्रित करते है। अपने हक और आजादी के लिए लडते है। उनका मानना है ''उलगुलान खत्म नहीं होगा। आदिम खून है हमारा। ... काले लोगों का खून है यह। भूख... लांछन... अपमान... दुख... पीडा ने मिलजुलकर बनाया है इस खून को। इसी खून से जली है उलगुलान की आग। यह आग कभी नही बुझेगी... कभी नहीं।''[15] बिरसा ने सभी सोए हुए आदिवासियों को जगाने का कार्य किया, सभी के दिलो में स्वतंत्रता की चिंगारी जलाई। अपने अधिकारों के लिए लडना सिखाया। उनका मानना था कि ''जंगल हमारे थे... नदियाँ हमारी थीं... धरती हमारी थी। दिकू आए... जमींदार आए... मिशन आया... चर्च आया... अँगरेज आए.. .सिपाही आए... कचहरी आई। सब पसरते गए और हम मुंडा लोग अपने पैर सिकोडते रहे। संथालों के साथ भी यहीं हुआ।''[16] जो जंगल-जमीन के असली हकदार थे, वहीं मजदूरों की तरह खस्ता जीवन जीने के लिए मजबूर है। इतिहास के झरोखे से यदि देखे तो आदिवासी ही भारत के मूल निवासी है और उन्हीं से उनके सारे अधिकार छीन लिए गए है। बिरसा की मां बिरसा से यहीं सवाल पूछती हैं कि ''तू तो कहता था कि नून का पहाड़ खडा कर देगा।...माटी तेल की नदी बहा देगा।...गाय-गोरू होंगे हमारे दुआर पर। मेरी देख रेख करेगा... बाप की सेवा करेगा। कहाँ चला गया था रे तू? कुछ नहीं किया तूने। भिखमंगों से भी गए-गुजरे हो गए हम लोग। भूख और डर, बस यहीं साथ रहते हैं हमारे।''[17] अंग्रेजी शासनकाल ने भारत की पूरी तरह से कमर तोडने का कार्य किया। इस देश पर लगातार विदेशी सत्ताओं के आक्रमण की वजह से मूल निवासी ही अपने अधिकारों से बेदखल कर दिए गए। उन्हें खदेडा गया, अपमानित किया गया और तिरस्कृत जीवन जीने के लिए मजबुर होना पडा। नाटक का पात्र डोन्का कहता है ''मुंडा लोगों का जीवन अब नहीं बचेगा अब।... वे लोग हमें जंगल से खदेड रहे हैं।

बिरसा: कौन खदेड़ रहा है ?

भरमी: सरकार... साहेब...सिपाही, सब मिलकर खदेड रहे हैं।

धानी: वे कहते हैं कि अब जंगल का कानून लागू हो गया है।

पलामू...सिंहभूम, हर जगह एक ही कानून रहेगा।

भरमी: हर गाँव में माँदर-ढोल पीट रहे हैं कि सारी जमीन, सारा जंगल सरकार ने वापस ले लिया है।

धानी: जिस जमीन में हमारे दादा परदादा गाय गोरू चराते रहे. .. जिस जंगल की एक-एक डाल और एक-एक पत्ता हमारा है, वह जंगल अब हमारा नहीं रहा!

डोन्का : जंगल से न तो लकडी मिलेगी और न तो महुआ,... न मधु। सब उनका हो गया। शिकार भी नहीं।''[18] जिस जंगल से आदिवासी अपने पेट की आग बुझाते थे, जानवरों का पेट पालते थे जो जंगल उनकी रोजी रोटी का साधन था वहीं अब न रहा। ऐसे हालात में आदिवासी अपना गुजर बसर कैसे करेंगे? आदिवासी समुदाय के भविष्य की चिंता बिरसा मुंडा को थी इसीलिए बिरसा मुंडा ने हजारों लोगों को एकत्रित करके अंग्रेज सरकार के खिलाफ जनआंदोलन किया। आजादी के लिए, आदिवासियों के हक के लिए आगे आए और आदिवासी जनता की आवाज को उन्होंने बुलंद किया। उन्होंने कहां ''हाँ मैं आबा हूँ इस धरती का... भगवान हूं मुंडाओं का ... मेरा मिशन है आदिवासी समुदाय को मानवी अधिकार प्रदान करना इसके लिए गोरे लोगों के साथ संघर्ष करना। संघर्ष करके अपने अधिकारों की रक्षा करना। धरती आबा इस नाटक पर आधारित जीवन चरित्र नई पीढी को प्रेरणादाई रहेगा। धरती आबा जीवन में संघर्ष और लक्ष्य की और बढने के लिए प्रेरित करने वाली एक ओजपूर्ण गाथा है। नाटक बिरसा मुंडा के क्रांतिकारी संघर्ष और ब्रिटिश सरकार के जुल्मों के माध्यम से एक युगबोध को याद कराता है। बिरसा मुंडा के जीवन पर केंद्रित धरती आबा आदिवासियों के जीवन, धार्मिक अंधविश्वास, अन्याय को भी चित्रित करता है और सृजनशिलता से बिरसा मुंडा की प्रतिभा और व्यक्तित्व को लोगों के सामने लाता है। बिरसा ने आदिवासियों को जीने का सकारात्मक रवैया सिखाया। उसने आदिवासियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और मौलिक अधिकारों के प्रति जागृत किया। अंधश्रद्धा, भूतप्रेत, ताबीज, गंडे आदि से आदिवासियों को निकालने का प्रयास किया। हैजा और चेचक

14. ऋषीकेश सुलभ -धरती आबा, नाटक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010, पृ0 82
15. वही, पृ 19-20
16. वही, पृ 23
17. वही, पृ 26
18. वही, पृ 27

जैसी बिमारियाँ ईश्वरीय कोप नहीं बल्कि संक्रमित बिमारियाँ है। जिनका ईलाज किया जा सकता है। वह कहता है-''रोगी को अलग रखो, नमक सिझा कर पानी पिलाओं, उसके कपडे कुएं के किनारे झरने में मत धोओ। भात- पान्ता, घाटो, अमानी, धान जो भी खाओ ढककर रखो। बासी सडा मत खाओ।''[19] इस प्रकार बिरसा ने आदिवासियों को अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकालने का कार्य किया। बिरसा के कार्यो ने बिरसा को मुंडाओं का ईश्वर बना दिया। आदिवासी कौम बिरसा के बलिदान को कभी व्यर्थ न जाने देगी। रणेंद्र सुधीर पाल के अनुसार ''बिरसा राष्ट्रीय नेताओं की श्रेणी में आनेवाले पहले आदिवासी नेता बन गये इस सकारात्मक प्रभाव ने अन्य इतिहासकारों को भी प्रेरित किया है।''[20] भारत के सभी आदिवासी समुदाय ने आदर्श और प्रेरणा के रूप में स्वीकारा है। भगवान बिरसा मुंडा ने आदिवासी समुदाय में चेतना फूंकने का सबसे सशक्त कार्य मुक्ति दिलाने एवं उनकी अस्मिता जगाने का कार्य बिरसा मुंडा ने किया। इस जननायक का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं आदिवासियों के विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसीलिए बिरसा मुंडा को आदिवासी समाज का दीपस्तंभ माना जाता है। बिरसा नई पीढी के लिए युगप्रर्वतक है। इस महान योद्धा का नाम युगो-युगो तक लिया जाएगा। इसमे कोई संदेह नही।

निष्कर्ष - युग प्रवर्तक और आदिवासी समुदाय के मार्गदर्शक बिरसा मुंडा के रूप में उनका संघर्ष आज भी हमारे जीवन को प्रेरित करता है। बिरसा मुंडा का नायकत्व मनुष्य के मुक्ति संघर्ष का धवल प्रतिक है। बिरसा मुंडा का जनआंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल माना जाता है। इसीलिए नई पीढी के लिए उनकी संघर्ष गाथा प्रेरणादायी है। बिरसा मुंडा का मौजुदा साहित्य हमारे सामने कई प्रश्न एवं सवाल खडे करता है। जहाँ एक तरफ भारत सरकार बिरसा को एक स्वतंत्रता सेनानी और देशभक्त के रूप में मानती है वहीं दूसरी तरफ बिरसा के मूल सिद्धांतों का खुला उल्लंघन करती है। जहाँ सीएनटी ॲक्ट बिरसा और अन्य शहिद आदिवासियों के बलिदान एवं योगदान का फल माना जाता है। बिरसा के संघटनात्मक कौशल ने लोगों को प्रेरित किया और जमीदारों, ठेकेदारों के चंगुल से बचाया और आदिवासी समुदाय का जमीन पर पूर्ण स्वामीत्व हो इसकी पूरजोर कोशिश की है। इस प्रकार बिरसा मुंडा जैसे वीर स्वतंत्रता सेनानी के इतिहास से हमे आज के इंटरनेट युग में अनेक सीख मिलती है। बिरसा मुंडा का इतिहास और सिद्धांत आदिवासी आंदोलन के लिए ऐतिहासिक पर्व है। वहीं साहित्यकारों ने लोकनायक बिरसा मुंडा के संघर्ष और उनके शौर्य पर आधारित विभिन्न भाषाओं में जो साहित्य लिखा वह आदिवासी समुदाय और बिरसा की विचारधारा पर चलने वाले लोगों के लिए निश्चित रूप से प्रेरणादायी रहेगा इसमें कोई संदेह नहीं।

19. डॉ संजय कुमार शर्मा - आदिवासी जननायक: बीरसा मुंडा : महाराष्ट्र हिंदी परिषद: 15वां अधिवेशन 28-29 दिसंबर 'उपलब्धि' 2007 पृ0 253

20. संपादक : रणेंद्र सुधीरपाल - झारखंड एन्साइक्लोपीडिया, उलगुलानों की प्रतिध्वनियाँ, खंड-1 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008, पृ0 13

◆◆◆

पृष्ठ 44 का शेष **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण.....**

यह कहने में भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सहित्य और कला में उपलब्धियां समय की वह देन हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं, क्योकि हमारे पूर्वजों ने भविष्य के प्रति एक उदार नजरिया रखते हुये ही इसकी रचना की है,[5] इसी लिये यह धरोहरें ज्यों की त्यों हमारे सामने विद्यमान हैं। वर्तमान में ये भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन केंद्रीय संरक्षित स्मारक है, जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी विभाग के जयपुर मंडल के पास है। हमारा दायित्व न केवल वर्तमान में इनका संरक्षण और संवन करना है बल्कि आने वाली पीढियों के लिये इन्हें सजो कर रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

संदर्भः

1. दीपक शर्मा, हिस्टी एंड कल्चर ऑफ राजस्थान, राजस्थान इंडिपैंडेट पब्लिकेशन, 2018, पृ0 2
2. रमा मेहता, इनसाइड द हवेली, पेंगुइन बुक्स पुतनाम, 1996, पृ0 1
3. रमा शंकर त्रिपाठी, हिस्ट्री ऑफ एन्सिएंट इंडिया, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, 1981, पृ0 276
4. वही, पृ0 276
5. एस0 कृष्णस्वामी अयंगार, सीमा पब्लिकेशन, दिल्ली, 1980, पृ0 28

◆◆◆